रोज़गार अधिकार यात्रा पर पुलिस की बर्बरता
(रीतिका खेरा, द्वारा आँखों देखा हाल)

4 जून, सादे कपड़ों में पुलिस द्वारा रोजगार अधिकार यात्रा पर बर्बर हमला किया गया और अपनी ए के 47एस तक लोड कर लीं गई।

यह घटना छत्तीसगढ़ में सरगुजा जिले के बलरामपुर गाँव में घटी! यात्रा लगभग 8.30 बजे बलरामपुर पहुँची और अन्य आम सभाओं की तरह ही शान्तिपूर्वक जनसभा आरम्भ की गई, कुछ ही मिनट में मोटर साईकिल पर दो पुलिस वाले सादे कपड़ों में वहाँ पहुँचे और सभी यात्रियों को जल्दी से तहसीलदार से मिलने के लिए कहा! यात्रियों ने नम्रता पुर्वक कहा कि वह सभा को जारी रखना चाहेगें क्योकि वह पहले ही पाँच घण्टें लेट है।

पुलिस वाले गुस्से में वापिस चले गये और 15 मिनट बाद 3–4 अन्य पुलिस वालों के साथ जो कि सादे कपड़ों में दूसरी मोटर साईकिलों पर सवार थे और लाठियों और बन्दूकों से लेस थे, आए। बिना किसी पूर्व सुचना के उन्होनें सभा भंग कर दी और बन्दूकें लोड़ कर ली। यह देख कर स्थानीय लोगों और यात्रियों ने जान बचाने के लिए टैक्टर और बस की ओर भागना शुरू कर दिया। लाठियों और बन्दूकों से लेस आदमियों ने एकत्र समूह पर अभद्र भाषा में चिल्लाना शुरू कर दिया। शुरूआत में वह केबल कुर्सियों पर लात मार रहे थे, लाइटें और माईक तोड रहे थे, पर बाद में उन्होने बस पर, यात्रियों पर और गाँव वालों पर लाठियाँ बरसाना शुरू कर दिया। साथ ही, उन्होने लोड की हुई बन्दूक ड्राईवर पर तान दी और उसे बस ले कर वहाँ से भाग जाने का हुक्म दिया। किसी कारणों से एक पुलिस वाले ने बस पर लाठी मारनी शुरू कर दी जिससे एक खिड़की का शीशा और बायें इन्डिकेटर का काँच टूट गया। बस में कई औरतें घायल हुई जिनमें नजिया, जो मुम्बई में सामाजिक कार्य की छात्रा है और मजदूर किसान शक्ति संगठन के साथ काम करती हैं और जुलेखा, जो छत्तीसगढ़ में स्वेच्छिक जर्नलिस्ट है, शामिल थी। मेरा ध्यान बस की तरफ था तभी मेरी लात पर लाठी पड़ी। किसी ने उसे रोकने की कोशिश की और कहा कि ''उसे मत मारो वह एक औरत है'' । पर वह अपने साथी को नहीं रोक पाया और फिर उसने मेरी बाजू पर मारा। कोसटव, जो जवाहर लाल विश्वविद्यालय में पी.एच.डी. का छात्र है, को सर पर लाठी पड़ी और उसके गाल से खून निकल रहा था। समर, (प्रोग्रेसिव स्टूडेंट यूनियन का कार्यकर्त्ता) को घुटने पर लगी। पुर्नाराम जो राजस्थान के तिलोनिया गाँव से आए थे, कमर पर लगी, और सबसे ज्यादा जॉन ट्रेज (अर्थशास्त्री) को लगी। जिस वक्त यह धटना धटी उस वक्त वह सड़क के उस पार फोन करने में व्यस्त थे। लोगों का शोर और चीखें सुनकर वह सभा स्थल की ओर भागे, लेकिन जैसे ही वह वहाँ पहुँचे चार आदमियों ने उन्हे घेर लिया और लाठियों से मारना शुरू कर दिया। बिना ज्यादा जानोमाल के नुकसान के यात्री वहाँ से भागने में सफल रहे। पर गाँव वालों की स्थिति अब भी स्पष्ट नहीं है। उनकी सुरक्षा भी चिंता का विषय है।

स्थानीय लोगों के अनुसार, यह घटना, क्षेत्र में पुलिस बल के स्वछन्द प्रयोग का लक्षण है। ज्यादातर लोग राज्य अधिकारियों के डर के साय में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यह बात इससे साबित होती है कि जब घटना के बाद पास के दूसरे गाँव में फोन करने की कोशिश की गई तो बाद में निशाना बनाए जाने के डर से कोई भी सहायता के लिए आगे नहीं आया।

5 जून को हम में से कुछ लोग एक एफ. आई. आर. लिखवाने वापिस अम्बिका पुर गए, तब तीन चक्कर लगाने के बाद हम आई. जी. ए. एन उपाध्याय से मिलने में सफल हुए। उन्होने हमें जिम्मेवार व्यक्तियों के खिलाई कार्रवाई करने का कोई आश्वासन नहीं दिया। बलरामपुर के एस. पी जी. पी. कालूरी, भी कुछ समय के लिए इस बैंठक मे शामिल थे। आश्चर्यजनकरूप से उन्होने ऐसे किसी भी लाठी जार्च के होने से इन्कार कर दिया। उन्होने पुलिस के लिए यह भी कहा कि जब तक यह साबित न हो तब तक बाहरी कोई भी व्यक्ति नक्सली होने के शक के घेरे में होगा ।

पुलिस द्वारा की गई प्रेस रीलीस और भी ज्यादा चौकाने वाली है जिसमें कई गलत एवं झूठे वक्तंव्य हैं जैसे कि यात्री कथित रूप से ''तहसीलदार हाय हाय'' और ''पुलिस प्रशासन मुर्दाबाद'' के नारे लगा रहे थे, जबकि यह झूठ है। यह कहा गया कि यात्रियों ने सड़क जाम कर दी जब उन्हे वहाँ से जाने के लिए कहा गया। यह भी झूठ है – कि एक बार लाठी चार्ज होने पर यात्रियों के पास साफ–तौर से बच कर भागने का पर्याप्त समय था। यदी ऐसा था तो सड़क को जाम करने की बात पूरी तरह से बेबुनियाद है क्योकि उस (शाम के) वक्त सड़क पर बिल्कुल भी ट्रेफिक नहीं था। तीसरी बात जो प्रेस रीलीस मे कही गई उसके अनुसार यात्रियों में ''जवान नेपाली दिखने'' वाली लड़कियां भी थी, जिनकी वजह से पुलिस को उन पर शक हुआ कि वह नकसली हो सकते है। अंत में इस प्रेस रीलीस में कहा गया कि यात्रियों को ''सम्मानजनक तरीके से'' बस में बैठाकर रामानुजगंज की ओर रवाना कर दिया गया जहाँ यात्रा का अगला कार्यक्रम होना था। किसी भी मामले में, ऐसा मुश्किल जान पड़ता है कि बयान में कहा जाए कि आगन्तुक नकसलि होने के शक के घेरे में है और दावा किया जाए कि उन शंकित नकसलियों को सम्मानजनक तरीके से उनके अगले कार्यक्रम के लिए रवाना किया जाए।

रीतिका खेरा, दिल्ली के अर्थशास्त्र स्कूल की पी.एच.डी. की छात्रा।